IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, February 2026
Impact Factor: 8.2

पेटेंट और प्रतिस्पर्धात्मक लाभ

डॉ. शिवांशु पांडेय

अतिथि विद्वान - वाणिज्य विभाग

शासकीय ठाकुर रणमतसिंह महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश

सारांश: (Abstract)

यह शोध पत्र आधुनिक व्यावसायिक परिदृश्य में पेटेंट की रणनीतिक भूमिका पर केंद्रित है, विशेष रूप से वे कैसे प्रतिस्पर्धात्मक लाभ (Competitive Advantage) **का स्रोत बनते हैं। पेटेंट न केवल आविष्कारों की नकल से सुरक्षा प्रदान करते हैं, बल्कि वे बाजार में विशेषाधिकार, उच्च मूल्य निर्धारण, निवेश आकर्षण, लाइसेंसिंग अवसर और दीर्घकालिक बाजार प्रभुत्व स्थापित करने में सहायक होते हैं। वैश्विक स्तर पर तेजी से बढ़ती तकनीकी प्रतिस्पर्धा में, मजबूत पेटेंट पोर्टफोलियो कंपनियों को प्रतिस्पर्धियों से आगे रखता है, नवाचार को प्रोत्साहित करता है तथा आर्थिक मूल्य सृजन में महत्वपूर्ण योगदान देता है।**

शोध में पेटेंट को संसाधन-आधारित दृष्टिकोण (Resource-Based View) **के माध्यम से विश्लेषित किया गया है, जहां पेटेंट को दुर्लभ, मूल्यवान, अपूरणीय और संगठन द्वारा नियंत्रित संसाधन माना जाता है। स्टार्टअप्स और स्थापित कंपनियों दोनों के संदर्भ में पेटेंट रणनीतियां (जैसे फेंसिंग, ब्लॉकिंग, क्रॉस-लाइसेंसिंग) की चर्चा की गई है। भारत जैसे विकासशील बाजारों में पेटेंट प्रणाली (पेटेंट अधिनियम** 1970 **और संशोधन) के माध्यम से नवाचार को बढ़ावा देने तथा प्रतिस्पर्धा को संतुलित करने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। हाल के वर्षों में भारत में पेटेंट फाइलिंग में तेज वृद्धि देखी गई है –** FY 2020-21 **में** 58,503 **से** FY 2024-25 **में** 1,10,375 **तक – जो देश की बढ़ती नवाचार क्षमता को दर्शाता है। निष्कर्ष में**

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-31272

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, February 2026
Impact Factor: 8.2

पेटेंट को मात्र कानूनी सुरक्षा नहीं, बल्कि व्यावसायिक विकास की रणनीतिक संपत्ति के रूप में देखने की सिफारिश की गई है, जो सतत प्रतिस्पर्धात्मक लाभ (Sustainable Competitive Advantage) प्राप्त करने में सहायक हो सकती है।

कीवर्डस:(keywords)

पेटेंट, प्रतिस्पर्धात्मक लाभ, बौद्धिक संपदा अधिकार, नवाचार संरक्षण, संसाधन-आधारित दृष्टिकोण, स्टार्टअप रणनीति, बाजार प्रभुत्व, लाइसेंसिंग, तकनीकी प्रतिस्पर्धा, सतत लाभ, पेटेंट पोर्टफोलियो, VRIO फ्रेमवर्क।